आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:18/01/2023; Accepted:20/01/2023; Reviewed: 24/01/2023; Published:31/01/2023

तमिल साहित्य - संगकाल के प्रसिद्ध कवयित्री "अव्वैयार"

डॉ. बी.कामकोटी,
सह प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
अण्णामलै विश्वविद्यालय

डॉ. बी.कामकोटी, "तमिल साहित्य - संगकाल के प्रसिद्ध कवयित्री "अव्वैयार" , आखर हिंदी पत्रिका, खंड3/अंक 1/जनवरी 2023, (133-138)

प्रस्तावनाः

तमिल संग काल साहित्यकारें में अव्वैयार अपने सविशेष व्यक्तित्व एवं उत्कृष्ट रचनाओं के जरिये अतिप्रशस्त है। शिल्पगत नवीनता के अलावा उनकी हर रचनाओं विद्यमान कथ्य विभिन्नता भी शुरू से लेकर सहृदय आस्वादकों को हठात् उत्कर्षीत करती थी। तमिल के संगकाल के कतिपय कवियित्र ऐसी हैं जो स्वकीय सामथर्य से युगीय प्रवृत्तियों का स्पष्टतया और पूर्णतः संकेत कर देते हैं-कविता एक लोकप्रिय विधा है। यह एक विशेष प्रकार की अनुभूति है। प्रकृति के सारे सौंदर्य को समेटने की शक्ति इसमें निहित है। कविता पढ़कर, सुनकर या सृजन कर हमें जो आनंद मिलता है वह अत्यंत दुलर्भ है। हिंदी कवति के क्षेत्र अत्यंत समृद्ध एवं सशक्त है। संगकाल में तमिल कविता के क्षेत्र में एक नयी स्फूर्ति आयी। वे काल्पनिक दुनिया को छोड़कर यथार्थ धरातल पर उतरने लगे। अव्वै अपनी कविताओं के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विदूरपताओं को जन मानस के सामने प्रस्तुत कर अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया। इनमें अव्वै का योगदान महत्वपूर्ण है।

तमिल साहित्य

तमिल साहित्य भण्डार का विभाजन तीन भागों में किया गया है । जैसै, इयल (साहित्य) इसै तमिल (गेय साहित्य) और नाटक तमिल आदि । तमिल के लघुगीत, प्रबंधात्मक काव्य व्याकरण ग्रंथ आदि उसके साहित्य भण्डार की संपन्नता को प्रकट करते हैं । तमिल की कविताओं की विशेषता यह है कि उसमें विचार और अभिव्यक्ति का सुन्दर सम्मिश्रण है । कई भारतीय भाषाओं में साहित्य सृजन का काल चैदहवीं शताब्दी माना जाता है । लेकिन उस समय तमिल का आधुनिक काल प्रारंभ हो जाता है । इससे हमें उसके साहित्य की प्राचीनता का परिचय मिल जाता है । व्यासर जी ने अपने महाभारत में तमिल प्रांत के प्रसिद्ध राजाओं का नाम उल्लेख किया है । उन्होंने लिखा है कि युधिष्ठिर से संचालित राजसूय यज्ञ में भाग लेने के लिए दक्षिण से चेर,चोल,पांडिय राजा भी आये थे , जो उस समय तमिल प्रांत के तीन प्रधान शासक थे । व्यासजी ने उल्लेख किया है कि द्रौपति के स्वयंवर में भाग लेने के लिए पांडिय राजा आए थे, चोल और पांडिय राजा युधिष्ठिर को कर देते थे, और अर्जुन का विवाह पांडिय राजा की पुत्री चित्रांगता से हुआ।

संगकाल

संगकाल ईसा पूर्व पच सौ से ईसा के पाँच सौ वर्ष तक के समय को संगम युग माना गया है। प्राचीन तमिल प्रदेश के पश्चिमी समुद्रतटवर्ती प्रदशों में चेरवंशीय राजा शासन करते थे। चेर प्रदेश की राजधानी वंचिनगर-वंचियूर कहलाता है। आज तिरुवंनतपुरम के निकटस्थ वंचियूर ही है। तमिलप्रदेश के दक्षिणी समुद्रतटवर्ती प्रदेशों पर पाण्डिय राजाओं का शासन दल रहा था । प्रथम संगम दक्षिण मदुरै में, दूसरा संगम कपाटपुरम तथा तीसरा संगम वर्तमान मदुरै में स्थित था । संगकाल- साहित्य तमिल का प्राचीन संगमकालीन साहित्य कला का कोश है । 'पत्तुपाटटु''एट्टुत्तोकै' 'ही संगमकालीन साहित्य कहलाता है । तीसरे संग साहित्य में अठारह ग्रंथों की रचना हुई थी, जो दो भागों में संकलित है-वे हैं एट्टुतोगै

{आठ ग्रंथों का संकलन, पत्तु पाटटु {दस ग्रंथों का संकलन} आदि । इसका विभाजन पद्यों के चरणों की न्यूनतम संख्या तीन है और अधिकतम संख्या एक सौ बयासी हैं । एट्टुतोगै में आठ ग्रंथ है। जैसे नट्रिणै, कुरुंतोगै, ऐंकुरुनूरु, पदिट्र पत्तु, परिपाडल, कलित्तोकै, अगनानूरु, पुरनानूरु । पत्तुप्पाटटु में दस ग्रंथ हैं जैसे तिरुमुरुगाटु पडै, पोरुनाटु पडै,सिरुपाणाटु पडै, पेरुमपाणाटु पडै,मलैपडु कडाम, मदुरै कांचि, मुल्लै पाट्टु, कुरिंजि पाट्टु, पटिटनम पालै, नेडुनल वाडै आदि ।

संगकाल में नारी

परिवार की प्रथा और पंरपरा के अनुसार विवाह-संपन्न होता है । लेकिन विवाह-संस्कार को संपन्न करने के लिए कोई पुरोहित नहीं होता है । परिवार के बुजुर्ग जन तथा समाज के अन्य लोग विवाह संपन्न कराते हैं ।

गृहपति को तमिल में 'तलैवन' तथा गृहिणी' को 'तलैवी' कहा जाता है। घर तथा समाज दोनों जगहों पर नारी, पुरुष के साथ समान रूप से स्वतंत्रता और समानता का अनुभव करती है। कर्पु इसका मतलब है वैवाहिक जीवन। विवाहोपरांत पारिवारिक जीवन से संबंधित बातों की इसमें चर्चा हुई है। विवाह को कर्पु कहा जाता था जिसका मतलब था सतीत्व। क्योंकि सतीत्व की रक्षा करता है और अन्य पुरुषों के साथ नैतिक आचरण का पालन करने को बाध्य करता है। सफल पारिवारिक जीवन चलाने के लिए नारी को आत्मसंयमी, स्वच्छ व्यवहार करनेवाली, सही आचरण से युक्त होना आवश्यक माना जाता है। सहनशीलता से रहना, आत्मसंतोश के साथ रहना, ये सब पत्नी के गुणों की विशेषताएं मानी जाती है।

अव्वैयार -जीवनवृत्त

संग-काल की प्रसिद्ध कवयित्री औव्वेयार, तमिलनाडु में शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों के लिए एक सुपरिचित नाम है। अव्वैयार का शाब्दिक अर्थ है 'माता की भांति' पूजनीय एवं वंदनीय नारी। तमिल के स्वर में 'औ' अक्षर पढाते समय 'अव्वै' शब्द से सीखते है। तमिल के मणिमेखलै साहित्य में अव्वै का शब्द माँ, अम्मा अर्थ में प्रयोग करते हैं। ऐसे ही शिलप्पधिकारम में अव्वै' को अम्मा पुकारते हैं। अव्वै {पाणर} गायक के कुल में जनमत होने से 'पाटी' अव्वै पाटी' पुकारते हैं। मु.अरुणाचलम ने कहा है कि "अव्वै ने कुंआॅरी होकर वृद्धावस्था तक तप, योग में लीन होकर पाण्डित्य में निपुण थी।" औव्वै का नाम शायद उनको उपनाम भी हो सकता है।

औव्वैयार के नाम पर मंन्दिर –

परंबु देश में पारि राजा शासन करता है। विरोधी दल ने षट्यंत्र करके पारी मारा दिया है। उनकी दो पुत्रियां अंगवै, संगवै दोनों पुत्रियाँ बहुत दुख में रह जाती हैं। उसी समय पारि के मित्र कपिलर उन दानों पुत्रियों को शादी करने के प्रबंध किया है। चेर,चोल, पाण्ड़िय तीनों राजा ने पारि से नफरत करते हैं। इसलिए उनकी पुत्रियों के विवाह करने इन्कार करते हैं। इनकी सूचना मिलते ही अव्वै ने उनकी बेटियों की शादी कराना चाहती है। पहाड के राजा दैविकन से संबंध रखना चाहती है। इस कारण से अव्वै जी मे वेंदर से विनती की है। औव्वै जी ने भगवान श्रीगणेश से प्रार्थना कर खुद अपने हाथ से लिखी ताड़ पत्र में विवाह के मूहूर्थ निश्चय किया है। तीनों राजाओं एक शर्त रखकर शादी करने को माना हैा। तब मूवंेतर षादी में ताड के फल मांगे है । उस समय ताड के पेड़ सूखे गये हैं। औव्वै जी ताड फल मिलने वरुण भगवान से प्रार्थना करके गाने लगी। तब पानी भी बरसने लगीं। उस समय ताड के फल का मौसम नहीं था। औव्वै ने अपने गीतों से ताड़ के फल प्राप्त कराई। दोनों बेटियों को विवाह संपन्न हुई है। और खुशी खुशी से दांपत्य जीवन में सफल हो जाती है।

तमिलनाडु में औव्वे के नाम से मंदिर बनाई है। औव्वै को देवता के रूप में पूजा करते हैं। कुंआॅरी नारी यहाँ होकर औव्वे जी से प्रार्थना करके शादी तैयार हो जाती है। यहां के शिव, पार्वती,औव्वै तीनों के मन्दिर है।

शादी के मंगतेर हो तो विवाह पत्र को वहां रखकर प्रार्थना करते हैं। इस मंदिर चेलम और ईरोडु के बीच के रास्ते में 5.कि.मि दूर पर है। मंदिर का नाम कल्याण औव्वैयार। इस से स्पष्ट हो जाता है कि संगकाल कवयित्र औव्वे अपने आप कुंऑरी होकर सेवकिा की नारी के रूप में सामने आयी है।

अव्वै- ममतामयी नारी:-

पारि अदियमान नामक क्षेत्रपाल तथा चेर,चोळ,पांडिय राजाओं के साथ अव्वैयार की गहरी मैत्री रही। अदियमान नामक तकडूर के शासक के साथ उसकी अच्छी मित्रता थी। एक बार उनके तथा तोंडैमान नामक एक अन्य राजा के बीच वैमनस्य बढ़ जाने पर औव्वैयार, अदियमान की तरफ से तोंडैमान के पास दूत बनकर गई और युद्ध रोकने का हर संभव प्रयास किया। उस समय तक अव्वैयार काफी वृद्धा हो चुकी थी। अतः आयु की वृद्धि के लिए आँवले के फल जो राजा को प्राप्त हुआ था, उसे उन्होंने स्वयं न खाकर अव्वैयार को खाने दिया। राजा के इस प्रेम से गद्गद् होकर अव्वैयार ने जो गीत गाया था वह अत्यंत लोकप्रिय हो गया। 'पुरनानूरु' तथा अन्य काव्य संकलनों में अव्वैयार के लगभग साठ गीत संकलित है। ये गीत न केवल उनकी विद्वत्ता, बुद्धिकुशलता एवं काव्य-कौशल को अभिव्यक्त करते हैं।

अव्वै -दूतावाहिनी नारी:

राजा आपस में दुष्मनी के निपटाने के लिए दूत परमावशयक माना जाता है। दूत एक प्रकार का सलाहकार का काम करता है। इस कार्य को अव्वै जी कर रही है। एक बार अदियमान अव्वै जी को , तोण्डैमान से दूत के रूप में भेजा है। अव्वै वहां युद्ध को रोकने के लिए तोण्डैमान से विनती की है। उनसे अदियमान और तोण्डैमान के कार्य के तुलना करके बता रही है। अपने युद्ध सामग्री बहुत सुन्दर, माला के साथ शोभायन दीख पडता है। अदियमान की युद्ध सामग्रियां में तलवार की तेज नहीं। इसलिए वह उन सामग्रियों को लुहार से भेजा है। ऐसे प्रशंसा से निंदा करके अपने वाकचातुर्य से जीत ली है। अव्वै के बराबर दुनिया में कोई इस प्रकार दूतवास नहीं है।

अव्वै -भक्ति नारी:-

अव्वै जंगल की ओर चल रही है। दोपहर के समय धूप में अव्वै के देह बहुत गर्मी हो गयी है। अव्वै को बहुत थकान से भूख लगने लगती है। थोडी दूर पर जामून का पेड दिखायी है। वहां एक बालक पेड पर बैठकर जामून का फल का स्वाद कर रहा हैा। अव्वै जी उस बालक से अपनी थकान दूर करने के लिए कुछ जामून का फल मं गी। बालक ने कहा दादी, आपको गरम फल चाहिये या कच्चा फल। अव्वै जी परेशान में लग गयी है। अव्वै जी को पक्के फल को खाना चाहती है। बालक ने जामून का फल को बहुत जोर से हिला दिया है। बहुत सा जामून नीचे गिरा है। अव्वै उस पक्के फल को लेकर, वह फल् रेत लेपने से उसे उडा दिया। तुरन्त बालक ने कहा 'दादी

क्या फल गरम है' । बालक के चातुर्य की बात देखकर अव्वै अचरज में पड गयी । उस सयम पता चलता है कि वह बालक भगवान कार्तिकेयन है । अव्वै जी को कार्तिकेयन - भक्ति का दर्शन हुआ है ।

अव्वै - नीति रचना

आत्तिचूडि प्राचीन तमिल साहित्य की प्रसिद्ध कवयित्री है अव्वैयार । वह बडी दीदी के रूप में बहुत लोकप्रिय है । उनकी आत्तिच्डि' कोण्ड्रैवेंदन आदि कविताएं आज भी बालकों के मध्य प्रचलित है ।अव्वैयार ने बच्चों को कहानियाँ सुनाती है । बच्चों नीतितत्व की बातें हमेश स्मरण करते हैं । तिरुक्कुरल के बाद अव्वै के आत्तिचचूडि बहुत प्रसिद्ध है। तिरुक्कूरल दोहे के रूप में हो तो आत्तिच्चूडि दो चीर से बनाया गया है । संघ काल के कवि तिरुवल्लुवर, कपिलर, परणर, इडैकाडर, अदियमान समकालीन कविजन माने जाते हैं।

आत्तिच्चूडि 1. अरं शॅय विरुंबु । दान-धर्म करने की इच्छा करें । 2. आरुवदु शिनं क्रोध को आप में रखें । 3. इयल्वदु करवेल् । संभाव्यता को न छिपावें । 4. ईवदु विलक्केल । दान न रोके । 5. उडैयदु विळंबेल । अपनी संपत्ति प्रकट न करे । 6. ऊक्कमदु कैविडेल उत्साह न छोडें । 7. एण एळुत्तु इगळ्ेल । गणित और व्याकरण की अवहेलना न करें । 8. एप्पदु इगळिच्च । भीख माँगना निंदनीय है । 9. ऐयमिट्टु उण । भिक्षा देकर खावें । 10. ओप्पुर ओळुगु । दुनियादारी बरतें । 11. ओदुवदु ओळियेल् । स्वाध्याय न छोडे । 12. अव्वियं पेसेल । ईर्ष्या से न बोलें । 13 अःकं शुरुक्केल् । धन का अपसंचय न करें । नीति तत्व में:- नारियां मीठी आवाजों से बोलना चाहिये। माता-पिता की रक्षा करना, । कृतघ्न बनें ।छल-कपट की बातें न करें । । अशोभनीय कार्य न करें । बाल्यावस्था में सीखें । ईश्वर को न भूलें । अधिक न सोवें । रक्षा करना ही व्रत है । भलाई करके जिएँ ।नीचता दूर करें ।सद्गुण न छोडें । आलस्य से न भटकें । अपने व्यवहार से योग्य बनकर चलें दान देने की इच्छा करें । सोच-समझकर काम करें । पत्नी के साथ रहें ।

निष्कर्षः अव्वै - जीवन और व्यक्तित्व उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । वह संगकाल युग की राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से अत्यधिक प्रभावित दिखाई देता है । यहाँ विभिन्न धर्म के लोग विभिन्न जातियों के लोग उनकी रीति-रिवाजों के मानने वाले और रहते हैं । अव्वै के संपूर्ण साहित्य का विश्लेषण करने के पश्चात् हमें यह ज्ञात होता है कि उन्होंने सदैव मानव-मूल्यों सामजिक संस्कृति की एकता की बात की है । इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अव्वै के साहित्य आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है और समाज के लिए प्रेरणास्रोत है । नारी अबला न होकर सबला ही है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1.औवैयारीन वाळवुम नीति नूलकळुम-नाकै विजयभरती-लियो पब्लिसर्स,चेन्नई 35.

2.औवैयार अवरै पट्रीयुम अवरुडैय पडैप्प्ुकल पट्रीयुम -तायम्माल अरवाणन तमिलकेाटटम चेन्नई 29

3.औवैयारीन वाळवुम वाक्कुम -विद्वान नारायणपिल्ले नर्मदा पबर्लिस टी.नगर,चेन्नई

4. संगम युग-श्याम मनोहर मिश्र

5.तमिल संगम-साहित्य-डॉ.एम.शेषण ।

6.औव्वयार तिरुवुल्लम - ति.सु.बालसुन्दरम पिल्लै, तिरुनेलवेलि शैव सिद्धांत नूरपतिप्पु कळकम

****